नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पराली संकट पर सुप्रीम कोर्ट की तल्ख़ चेतावनी

सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को पराली जलाने की समस्या पर जो कड़ा रुख अपनाया है, वह केवल न्यायपालिका की चिंता नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक बेचैनी को दर्शाता है. हर साल अक्टूबर-नवंबर में उत्तर भारत की हवा जहरीली हो जाती है और लाखों लोगों के स्वास्थ्य पर संकट मंडराने लगता है. दिल्ली से लेकर पंजाब-हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक धुंध की चादर फैल जाती है. ऐसे में सुप्रीम कोर्ट का कहना कि केवल जुर्माना लगाने से काम नहीं चलेगा, बल्कि जेल भेजने जैसे दंडात्मक कदम भी उठाने होंगे, एक कठोर लेकिन गंभीर संदेश है. हालांकि यह भी उतना ही सच है कि पराली जलाना केवल किसानों की 'जिद' नहीं है. यह समस्या गहराई में जाकर समझने की मांग करती है. किसान फसल काटने के बाद बहुत सीमित समय में अगली बुवाई की तैयारी करता है. पराली हटाने के लिए उसके पास न मशीनें हैं, न श्रमबल, और न ही पर्याप्त आर्थिक सहायता. ऐसे में आग लगाना उसे सबसे आसान और सस्ता उपाय लगता है. यदि सरकार किसानों को केवल अपराधी मानकर जेल भेजने की नीति अपनाएगी, तो यह न सिर्फ अन्याय होगा, बल्कि कृषि संकट को और गहरा देगा. इसलिए न्यायपालिका का 'कैरेट एंड स्टिक' यानी गाजर और छड़ी की नीति का सुझाव संतुलित दृष्टिकोण का मार्ग खोलता है.एक ओर किसानों पर जिम्मेदारी है कि वे पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले तरीके न अपनाएं. दूसरी ओर सरकार का भी दायित्व है कि वह उन्हें ऐसे विकल्प उपलब्ध कराए जिनसे पराली का लाभकारी उपयोग हो सके.

सुप्रीम कोर्ट ने सही कहा कि पराली को बायोफ्यूल, ईंटें बनाने या अन्य उद्योगों में कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है. यदि किसानों को मशीनरी, सब्सिडी और बाजार की गारंटी मिले, तो वे स्वेच्छा से पराली जलाना बंद कर देंगे. आज भी कुछ हिस्सों में हैप्पी सीडर और सुपर स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम जैसी मशीनें किसानों को उपलब्ध कराई गई हैं, लेकिन उनका प्रसार सीमित है और लागत अधिक है. देश की अपेक्स कोर्ट ने प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों और समितियों में खाली पदों पर भी चिंता जताई है. यह टिप्पणी बेहद प्रासंगिक है, क्योंकि प्रदूषण पर नियंत्रण केवल नीतियों से नहीं, बल्कि उनके क्रियान्वयन से होता है. जब निगरानी और प्रवर्तन के जिम्मेदार संस्थान ही कमजोर या निष्क्रिय हों, तो किसानों और उद्योगों से नियम पालन की उम्मीद अधूरी रह जाती है. राज्यों को इस दिशा में तुरंत गंभीर पहल करनी चाहिए. पराली जलाने से निकलने वाला धुआं केवल स्थानीय समस्या नहीं है. यह वातावरण में मिलकर कार्बन उत्सर्जन बढ़ाता है, जलवायु परिवर्तन को तेज करता है और सांस की बीमारियों से लेकर कैंसर तक का खतरा पैदा करता है.

दिल्ली और एनसीआर के बच्चों व बुजुर्गों पर इसका प्रभाव सबसे अधिक पड़ता है. इसलिए इसे केवल 'कृषि' या 'ग्रामीण' समस्या समझना गलत होगा. यह राष्ट्रीय स्वास्थ्य और पर्यावरण संकट है. सुप्रीम कोर्ट की सख्ती से उम्मीद है कि सरकारें अब और टालमटोल नहीं करेंगी. किसानों के लिए प्रोत्साहन योजनाएं और पर्यावरण के लिए सख्त दंडात्मक कदम, दोनों समानांतर चलें तभी समाधान संभव है. किसानों को अपराधी नहीं, बल्कि साझेदार मानकर नीतियां बनानी होंगी. दरअसल,पराली संकट का स्थायी समाधान तभी निकलेगा, जब इसे दंड और प्रोत्साहन दोनों के संतुलन से देखा जाए.बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट की चेतावनी एक अवसर है,सरकार और समाज दोनों के लिए कि वे इस चुनौती को मिलकर हल करें. अन्यथा हर साल सर्दियों की धुंध में लाखों लोगों की सांसें घुटती रहेंगी.

जनजातीय नायक और धार्मिक आस्था

राजा शंकर शाह और कुंवर रघुनाथ शाह बलिदान दिवस पर विशेष

सन् 1857 के महासमर में अपने प्राणों की आहुति देने वाले राजा शंकर शाह और कुंवर रघुनाथ शाह, गोंडवाना के गोंड राजवंश के प्रतापी राजा थे जो इस क्रांति में जबलपुर का नेतृत्व करते हुए अपनी आराध्य देवी काली चंडी की स्तुति में कविता लिखी जिसका उद्देश्य अपनी प्रजा में धार्मिक और देशभक्ति का भाव जगाने के साथ साथ अंग्रेज़ों के विरुद्ध संघर्ष का संदेश छुपा था। कविता की पक्तियां इस प्रकार है-

मूंद मुख डंडिन को चुगलौ को चबाई खाई
खूंद डार दुष्टन को शत्रु संघारिका
मार अंगरेज, रेज कर देइ मात चंडी
बचै नहिं बैरी-बाल-बच्चे संघारका ॥
संकर की रक्षा कर, दास प्रतिपाल कर
दीन की पुकार सुन अय मात कालका
खाइले मलेछन को, देर नहीं करौ मात
भच्छन कर तत्छन बेग घौर मत कालिका ॥

अंग्रेजों ने इसे देशद्रोही लेखन माना और पिता-पुत्र को देशद्रोही घोषित करते हुए 18 सितम्बर 1857 को अत्यंत निर्ममता से तोप से बांधकर उड़ा दिया । ये कविता जनजातीय नायकों के राष्ट्र प्रेम, आध्यात्म एवं धार्मिक आस्था का केन्द्र उस देवी शक्ति से प्रेरणा लेकर लिखी गई जो आज भी जबलपुर में गढ़ा पुरवा में मां माला देवी मंदिर के नाम से प्रख्यात हैं जो रानी दुर्गावती के वंशजों की कुलदेवी हैं। आदिवासी पूरखों द्वारा देवी काली चंडी की आराधना इस बात का प्रतीक है कि आदिवासी प्राचीन काल से ही शक्ति की प्रतीक देवी को अपनी आराध्या कुलदेवी मानते है जो सीधे सनातन धर्म की शक्ति परंपरा से जुड़े हैं । जबकि वर्तमान में आदिवासी की धार्मिक आस्था को लेकर भ्रमित करने का कार्य किया जा रहा है।

कुछ आदिवासियों द्वारा अपने ही समाज के पूरखों की धार्मिक आस्था पर प्रश्नचिन्ह लागा कर समाज की आध्यात्मिक अस्मिता को खत्म करने और जनजातीय समाज को बाटने का प्रयास हो रहा हैं। स्वतंत्रता के कई वर्षों के बाद जनजातीय समाज के नायकों को स्वतंत्रता आन्दोलन में दिये योगदान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिल पायी है।

वही तुष्टीकरण की राजनीति विचारधारा समाज के बलिदानी नायकों की धार्मिक आस्था पर प्रश्न खड़े कर इन नायकों के उस गौरवपूर्ण भाव को समाप्त करने का षडयंत्र है जिन पर आज जनजातीय समाज गर्व कर रहा है। ऐसी परिस्थिति में समाज का दायित्व हैं कि अपने पुरखों का राष्ट्र के प्रति समर्पण, उनकी संस्कृति, आध्यात्मिक एवं धार्मिक आस्था को संरक्षित कर आने वाली पीढ़ी को सौपें। यहीं राजा शंकर शाह और कुंवर रघुनाथ शाह को उनके बलिदान दिवस पर सच्ची श्रृद्धांजलि होगी ।

डॉ दीपमाला रावत
विषय विशेषज्ञ
जनजातीय प्रकोष्ठ,
राजभवन

ग्वालियर चंबल डायरी

छह महीने बाद ग्वालियर की पिच पर फिर सिंधिया, क्या है टारगेट!

हरीश दुबे

सिर्फ ग्वालियर चंबल अंचल ही नहीं बल्कि प्रदेश स्तर पर भाजपा की राजनीति को निर्देशित, नियंत्रित कर भविष्य की रणनीति और नियति को तय करने की सामर्थ्य रखने वाले दो बड़े छत्रप ज्योतिरादित्य सिंधिया और नरेन्द्र सिंह तोमर एक बार फिर आमने सामने हैं. अब तो पार्टी फोरम से परे जाकर सार्वजनिक मंचों पर भी इशारों और छद्म भाषा में एक दूसरे पर कटाक्ष किए जा रहे हैं. चूंकि स्थानीय सांसद भारतसिंह नरेंद्र सिंह के कट्टर समर्थक हैं, लिहाजा अपने नेता के साथ ताल मिलाते हुए वे भी ग्वालियर महाराज को चुनौती देने वाले अंदाज में हैं. ग्वालियर के इन दोनों सियासी खेमों की गुटबाजी तब और खुलकर सामने आ गई जब बीते रोज सिंधिया ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर ग्वालियर के विकास से जुड़े मसलात पर बैठक लेकर अफसरों को दिशा निर्देश दिए.

खास बात यह कि ग्वालियर के वर्तमान और भविष्य के प्रकल्पों पर मंथन के लिए बुलाए इस इज़लास में न तो स्थानीय सांसद भारतसिंह शरीक हुए और न उनके नेता नरेंद्र सिंह. भारत सिंह दिल्ली में थे तो नरेंद्र सिंह भोपाल में. नरेंद्र सिंह के समर्थक इस बैठक की वैधानिकता एवं औचित्य पर सवाल उठा रहे हैं. नरेंद्र के खास माने जाने वाले होटल कारोबारी सोनू मंगल ने तो साफ इल्जाम लगा दिया कि प्रभारी मंत्री की आड़ लेकर इस तरह की बैठकें की जा रही हैं. सोनू ने सिंधिया के संसदीय क्षेत्र गुना शिवपुरी के विकास को लेकर भी सार्वजनिक रूप से कटाक्ष किए. सांसद भारत सिंह ने करीब छह महीने पहले सिंधिया द्वारा उनके संसदीय क्षेत्र से जुड़े मामलों में दखल देने की तोहमत लगाते हुए ऊपर तक नाराजगी जताई थी, तब से सिंधिया अपने दौरे में ग्वालियर आकर सीधे शिवपुरी गुना निकल जाते थे लेकिन छह महीने बाद सिंधिया ग्वालियर में अरबों की लागत से बन रही एलीवेटेड रोड और फाइवस्टार रेल्वे स्टेशन तक के बारे में अफसरों को ताईद कर रहे हैं. कलेक्ट्रेट की बैठक में सिंधिया नरेंद्र सिंह के नजदीकी माने जाने वाले एक बड़े नेता को कार्यक्रमों में गैरहाजिरी पर फटकार लगाने से भी नहीं चूके. क्या सिंधिया को ग्वालियर के मामलात में फ्रीहैंड मिल गया है !

यूं ही नहीं उखड़े प्रद्युम्न और सिलावट

केबिनेट के बाद मंत्रियों के साथ सीएम की अनौपचारिक मीटिंग में प्रद्युम्न सिंह जिस तरह ग्वालियर की बदहाली के मुद्दे पर उखड़े और कलेक्टर से लेकर निगम कमिश्नर तक को आड़े हाथों लिया, प्रद्युम्न के इन गर्म तेवरों को जिस तरह तुलसी सिलावट का भी साथ मिला, उसके बाद माहौल गर्म हो उठा. चूंकि ये दोनों ही वरिष्ठ मंत्री सिंधिया के अनुयायी हैं, इसे देखते हुए सियासी हलकों में यही चर्चा है कि यह सब सिंधिया कैम्प की प्रेशर पॉलिटिक्स का हिस्सा है. पांच बरस पहले का वाक्या याद हो आया, जब कमलनाथ वजीरेआला होते थे और प्रद्युम्न इसी तरह उखड़ गए थे. इसके बाद सिंधिया फ्रंट पर खेले और कमलनाथ आउट हो गए लेकिन इस बार वैसी परिस्थितियाँ नहीं हैं. सिंधिया और सीएम के बीच अच्छा कॉर्डिनेशन है. संख्याबल के मामले में भी भाजपा विधायक दल इतना मजबूत है कि छोटे मोटे झंझावात झेलने में समर्थ है. दरअसल, विधायकी का चुनाव हराने वाले नेताओं सहित तमाम सिंधिया समर्थकों को निगम मंडलों में नियुक्ति का इंतजार है जो लंबा खिंचता जा रहा है.

लंबे इंतजार के बाद भगवा हुए कृष्णराव

तीन दफा पार्षद और नेता प्रतिपक्ष रहने के बाद कुछ महीने पहले तक कांग्रेसी महापौर के सलाहकार की भूमिका निभाने वाले कृष्णराव दीक्षित अन्ततः अपनी पार्टी को झटका देते हुए भगवा हो गए. उन्हें खुद सिंधिया ने भगवा पट्टिका पहनाकर भाजपा परिवार में शामिल किया. भाजपा ने उम्मीद लगाई है कि उनके आने से उपनगर ग्वालियर में लाभ होगा. प्रद्युम्न सिंह तोमर और अशोक शर्मा लंबे समय से उन्हें भाजपा में लाने की जुगत में थे. कांग्रेस उन्हें पहले ही पार्टी से बाहर कर चुकी थी. दीक्षित चाहते थे कि वे उपनगर में समर्थकों सहित एक बड़ा जलसा कर सीएम मोहन यादव और सिंधिया के समक्ष अपना जनाधार दिखाकर भाजपा में शामिल हों लेकिन सीएम की व्यस्तताओं के चलते यह मुनासिब नहीं हुआ और वे सिंधिया के समक्ष अकेले ही भाजपा शरणम् गच्छामि हो गए. अब भाजपा में कांग्रेस से आए पूर्व नेता प्रतिपक्ष की संख्या तीन हो गई है, ये हैं सुधीर गुप्ता, केशव मांझी और कृष्णराव. ये सभी सिंधिया समर्थक हैं. खास बात यह कि मौजूदा नेता प्रतिपक्ष हरी पाल भी सिंधिया के साथ ही भाजपा में आए थे.

स्थानीय निकाय चुनाव में देरी असहनीय

लोकतंत्र का तकाजा है कि स्थानीय निकाय चुनाव यथाशीघ्र कराए जाएं. निर्वाचित प्रतिनिधि न होने से जनसमस्याओं का निवारण नहीं हो पा रहा है और शिकायतों की सुनवाई नहीं हो रही है. अधिकारियों के भरोसे तंत्र चल रहा है. 2022 से निर्वाचन रुका हुआ है, क्योंकि ओबीसी आरक्षण लागू करने को लेकर विवाद की स्थिति है. चुनाव में असाधारण विलंब किसी भी कारण से उचित नहीं ठहराया जा सकता. सुप्रीम कोर्ट ने राज्य में स्थानीय निकाय चुनावों को सितंबर से पहले कराने के मई में दिए गए आदेश के पालन में विफलता व निर्षक्रयता को लेकर चुनाव आयोग व राज्य सरकार को फटकार सुनाई और सख्त आदेश दिया कि बगैर किसी टालमटोल के 31 जनवरी 2026 तक हर हाल में चुनाव की प्रक्रिया पूरी कर ली जाए. अब किसी तरह की बहानेबाजी नहीं चलेगी. यदि किसी भी तरह की सहायता की आवश्यकता हो तो 31 अक्टूबर के पहले अर्जी दायर करें. बाद में किसी भी प्रार्थना पर विचार नहीं किया जाएगा. चुनाव आयोग की ओर से विभिन्न दलीलें दी गईं जैसे कि बोर्ड परीक्षाओं की वजह से मतदान केंद्रों के रूप में स्कूल उपलब्ध नहीं हो पाएंगे. ईवीएम की कमी है . इसलिए 50,000 और ईवीएम चाहिए.

समय सीमा बढ़ाने की मांग पर अदालत ने कहा कि हम आपको इतना समय क्यों दें? क्या आप पहली बार चुनाव करा रहे हैं? आपकी निर्षक्रयता बताती है कि आप अयोग्य हैं. 31 अक्टूबर तक परिसीमन का काम पूरा कर लिया जाए. मार्च 2026 में होने वाली बोर्ड की परीक्षाएं चुनाव टालने का आधार नहीं हो सकतीं.

जिला परिषद और पंचायत समितियों का परिसीमन पूरा हो चुका है, लेकिन नगरपालिकाओं का अभी प्रगति पर है. बॉम्बे हाईकोर्ट में सीमा निर्धारण और वार्डों के आरक्षण को लेकर याचिकाएं लंबित हैं. इस पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि राज्य सरकार और चुनाव आयोग याचिकाओं को एक ही पीठ के सामने क्लबिंग कर रखने का अनुरोध कर सकते हैं. त्योहारों को लेकर कर्मचारियों की कमी की दलील ठुकराते हुए सुप्रीम कोर्ट ने इसे जानबूझकर की जाने वाली टालमटोल बताया.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

ट्रंप की अकड़ को धक्का हम नहीं खरीदते अमेरिकी मक्का

पड़ोसी ने हम से कहा, निशानेबाज, लोग बरसात के मौसम में स्वीट कॉर्न या भुट्टा शौक से खाते हैं. भुट्टे वाला भुट्टे को सेंककर उस पर नमक और नींबू का रस लगाकर ग्राहक को देता है. पुरानी फिल्म श्री 420 में नरगिस ने इचक दाना बीचक दाना गीत गाया था. पहेलियों वाले उस गाने की लाइन थी हरी थी मनभरी थी, लाख मोती जड़ी थी, राजाजी के बाग में दुशाला ओढ़े खड़ी थी- बोलो-बोलो क्या ! भुट्टा!

हमने कहा, छोटे-मोटे उठाईगीर को लोग भुट्टाचोर कहते हैं. पंजाब में मक्के की रोटी और सरसों का साग खाया जाता है. मक्के का आटा कॉर्नफ्लोर कहलाता है. आप भी चाहें तो स्वीटकॉर्न उबालकर खा सकते हैं. वैसे यह बताइए कि आज आप मक्के की बात क्यों कर रहे हैं?

पड़ोसी कहा ने , निशानेबाज, अमेरिका के वाणिज्य मंत्री हावर्ड लुटनिक आवाज लगाकर भारत से कह रहे हैं- भुट्टे ले लो! उन्होंने कहा हृश्वद्ध कि भारत 1 अरब 40 करोड लोगों का देश होने पर भी अमेरिका से 1 बुशेल मक्का क्यों नहीं खरीदता? अमेरिका में विश्व का 30 प्रतिशत से ज्यादा मक्का पैदा होता है.

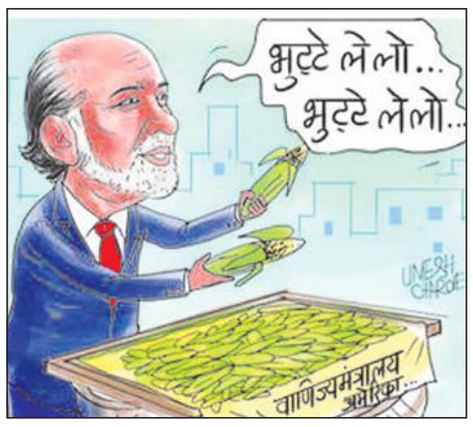

हमने कहा, हमारी सरकार का दृष्टिकोण है कि हमारे यहां भरपूर भुट्टे हैं. अमेरिका से मक्का, सोयाबीन और दुग्ध पदार्थ आने पर हमारे किसानों की स्थिति और खराब हो जाएगी. इनके आयात की कोई जरूरत नहीं है. इन चीजों के दाम कम रहने से भारतीय किसानों का नुकसान होगा. इसके अलावा जेनेटिकली मॉडिफाइड बीज आने से भारत की स्वदेशी फसलों पर बुरा असर पड़ सकता है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज पुरानी पीढ़ी के लोग वह समय भूले नहीं हैं जब भारत में अनाज का संकट था. 1965 में अमेरिका से आने वाला लाल गेहूं इतना निकृष्ट था कि रोटी गले से नीचे नहीं उतरती थी. ऐसी ही माइलो नामक लाल ज्वार थी. अमेरिका में जो अनाज जानवरों को खिलाया जाता था उसे भारत भेजा था. अपने साथ आए पार्थेनियम या गाजर घास के बीज ने हमारी जमीन को बंजर कर दिया था. इसलिए विदेशी अनाज हमें नहीं चाहिए. हमारे किसान सक्षम हैं. यहां पर्याप्त अन्न भंडार है तभी तो सरकार 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त अनाज दे रही है.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12026

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	4	■	5	
6		■	7		8		■
9		10	■	■	11		12
■	■	13	14		■	15	
16	17			■	18		
19		■	20	21		■	
22			■		■	23	■
24		■	25				

बाएं से दाएं
1. शहजादे सलीम की प्रेमकथा की मुख्य पात्र 5. फरेब, धोखा, छल (उर्दू) 6. एक पौधा जिसकी पत्तियों को दूध-शक्कर में उबालकर पिया जाता है 7. बुरे कामों से जीविका चलाने वाला दुराचारी (उर्दू) 9. धन की राशि, धन 11 विपत्ति, दुर्दशा (उर्दू) 13. गीली वस्तु का पतला लेप चढ़ाना, पोतना 15. एक सी वस्तुओं की माला, लड़ 16. नायक, सिखों की पदवी 18. किसी भी पशु या पक्षी का बच्चा 19. वह गुण जिससे कोई वस्तु चिपकती हो 20. जलाने वाला, जलन पैदा करने वाला 22. दुष्ट, पाजी व्यभिचार से उत्पन्न (उर्दू) 24. न्यायाधीश, निर्णायक (अं) 25. प्रशंसा के योग्य

ऊपर से नीचे
1. मसाले के साथ कुछ दिन रखे गए पदार्थ, चिरौंजी का पेड़ (उर्दू) 2. किसी कथा नाटक या काव्य का प्रमुख पात्र, अग्रेसर, श्रेष्ठ पुरुष 3. किस समय, कभी नहीं 4 घोड़े, ऊंट, हाथी आदि पशुओं का गोबर 5. गणित में भिन्न का एक भेद जिसमें हर दश या उसका कोई घात होता है 8. आठ रत्ती का प्रसिद्ध पुराना मान या तौल 10. चूरमा, एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा 12. तीर रखने का चोंगा, तूणीर (उर्दू) 14. आड़ करने के लिए लटकाया हुआ कपड़ा या चिक, छिपाव 16. पत्नी के भाई की पत्नी 17. पारा 18. साग, भाजी 21. हत्या करने या मार डालने वाला 23. जल

Solution 12025

अ	म	ल	ता	स	■	शा	दी
प	ह	ला	■	मा	ल	खा	ना
रा	ल	■	छा	ना	■	■	र
ध	■	म	ता	धि	का	र	■
■	चू	हा	■	का	र	ग	र
सं	■	म	सू	र	■	■	ग
प्र	वा	हि	त	■	पा	प	ड़
ति	■	म	ज	बू	र	■	ना

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष केप्रारंभ में अचानक धन लाभ का योग है, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, वर्ष के मध्य में राजनैतिक क्षेत्र में विवाद के कारण मन खिन्न रहेगा, साझेदारी में विवाद बढ़ेगा, धन संकट का सामना करना होगा, वर्ष के अन्त में व्यक्तिगत संबंधों मेंसुधार होगा, मित्रों के सहयोग से लाभ होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों से धन संकट का सामना करना पड़ेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का साझेदारी में विवाद बढ़ेगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को मित्रों का सहयोग, व्यापार मं वृद्धि होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को सहयोग प्राप्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक मित्रों की मदद मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को निजी पुरूषार्थ की प्राप्त होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मित्रों का सहयोग रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य सुन्दर, दुबला, पतला, लंबे कद का परिश्रमी होगा. किसी खास विद्या का ज्ञाता होगा. लेखन अध्ययन, रचनात्मक कार्यो में लाभ प्राप्त होगा. माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा.

मेष- पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी. शारीरिक कष्ट रह सकता है, किन्तु आपकी सूझबूझ से बाधायें दूर होंगी. लाभ प्राप्त होगा.

वृषभ- अचानक दूर गये मित्र के संबंध में सुखद समाचार प्राप्त होगा. साहसिक कार्यो की प्रशंसा होगी. निजी दायित्वों की पूर्ति होने को योग है.

मिथुन- आर्थिक क्षेत्र में प्रयासों में बांछित सफलता मिलेगी. राजकीय कार्यो में लाभ प्राप्त होगा. अधीनस्थ वर्ग का सहयोग प्राप्त होगा.

कर्क- कोई ऐसा कार्य संपन्न होगा, जिसके बदले आपको प्रशंसा प्राप्त होगी. मूल्यवान वस्तु प्राप्त होने का योग है. मित्र वर्ग आपको मदद करेंगे.

सिंह- शिक्षा के क्षेत्र में किया गया प्रयास सार्थक होगा. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी. आर्थिक क्षेत्र में सफ्लता मिलेगी. संतोष रहेगा.

कन्या- स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखकर कार्य करें, निजी दायित्वों की पूर्ति होगी. अनावश्यक विवाद को न बढ़ायें. शत्रु वर्ग परास्त होगा.

तुला- उपहार या सम्मान प्राप्त होगा. स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. दूर दराज की यात्रा का योग है. परिश्रम की अधिकता रहेगी. व्यय भी होगा.

वृश्चिक- पारिवारिक सुख एवं सहयोग मिलेगा. सम्मान और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी. लाभ ह?गा. नियमितता का ध्यान रखें. साहस में वृद्धि होगी.

धनु- दाम्पत्य जीवन सुखमय मधुरतापूर्ण रहेगा. पद प्रतिष्ठा बढ़ेगी. कोर्ट कचहरी के कार्यों में सफ्लता मिलेगी. बहुप्रतीक्षित कार्य बनने से हर्ष होगा.

मकर- अनचाही यात्रा करनी पड़ सकती है. विरोधी वर्ग सक्रिय रहेगा. शुभ कार्यो के बनने का योग है. नियोजित कार्य सफ्ल होगा. यश मिलेगा.

कुम्भ- किसी नवीन योजना का विकास होगा. परिश्रम की अधिकता रहेगी. मित्र वर्ग आपकी मदद करेगा. आपसी मतभेद दूर होंगे. यश मिलेगा.

मीन- आपसी संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी. कोई ऐसा कार्य न करें, जो आपको आगे चलकर कष्टप्रद हो. जमीनजायजाद प्रापर्टी के कार्यो से लाभ प्राप्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

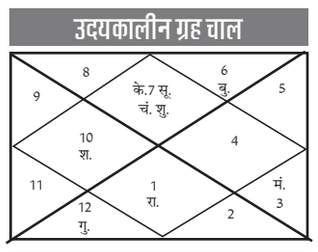

पंचांग

रा.मि. 28 संवत् 2082 आश्विन कृष्ण त्रयोदशी भृगुवासरे रात 11/47, आश्लेषा नक्षत्रे दिन 8/49, सिद्ध योगे रात 11/3, गर करणे सू.उ. 5/57 सू.अ. 6/3, चन्द्रचार कर्क दिन 8/49 से सिंह, पर्व- त्रयोदशी श्राद्ध, प्रदोष व्रत, शु.रा. 5, 7, 8, 11, 12, 3 अ.रा. 6, 9, 10, 1, 2, 4 शुभांक- 7, 9, 3.

व्यापार भविष्य

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी को आश्लेषा नक्षत्र के प्रभाव से जमीन के अंदर से प्राप्त होने वाले पदार्थ, तिल, और उड़द कालीमिर्च, लोहा के भाव में तेजी होगी. आज 10 बजकर 30 मिनिट से 20 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभदायक रहेगा. भाग्यांक 5165 है.

SUDOKU 7158

2		8	5	1	9	6		7
					8			1
		7	4	6		8		9
3	2				7			8
1		9		4		7		5
4			2				9	3
6		3		5	1	9		
8			3					
7		1	9	2	6	3		4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7157

7	1	9	8	5	3	2	6	4
4	5	3	6	2	9	7	1	8
6	2	8	4	7	1	9	5	3
9	8	2	7	3	5	1	4	6
1	3	6	9	4	8	5	7	2
5	7	4	1	6	2	8	3	9
8	4	7	5	9	6	3	2	1
3	6	1	2	8	7	4	9	5
2	9	5	3	1	4	6	8	7